ओम् शान्ति · **7-6-11** मधुबन

प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश (गुल्जार दादी)

आज अमृतवेले बापदादा के पास आप सबकी यादप्यार लेकर पहुंची तो रोज़ के प्रमाण बापदादा से दूर से मिलन मनाते दृष्टि में समाते समीप पहुंच गई और बापदादा की अलौकिक अव्यक्त अमूल्य बांहों में झूल रही थी। यह अलौकिक झूला तो इतना आनंदमयी था जो अनुभवी जाने इस सुख को। कुछ समय इस अतीन्द्रिय सुख में रहने के बाद मीठा बाबा बोले, बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? तो मैं बोली बाबा आज तो हम अपनी विशेष साथी स्नेही टीचर्स का यादप्यार लाई हूँ। ऐसा कहते ही बापदादा के नयनों में आप एक एक समाई हुई थी, साथ में निमित्त बनी हुई हमारी स्नेही दादी रतनमोहिनी भी बहुत स्नेह स्वरूप में समाई हुई थी। यह देख मैं भी बहुत खुश हो रही थी और दिल से यही निकल रहा था ''वाह हमारी साथी बहिनें विशेष सखियाँ वाह!ठ कुछ समय तक यही दृश्य देख, मैं भी आपके इस भाग्य को देख हर्षित हो रही थी।

इसके बाद बाबा बोले, यह मौन ग्रुप तो अच्छा कर्मेन्द्रिय जीत का पार्ट बजा रहा है। बाहर के बोल बोलने के बजाए **अन्तर्मुखी सदा सुखी** का अनुभव कर रहे हैं, **साइलेन्स इज़ गोल्ड** का अनुभव कर अपने में साइलेन्स की शक्ति का अनुभव बढ़ा रहे हैं। बापदादा बच्चों पर खुश है कि अपनी कर्मेन्द्रियों की कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर के अनुभव, स्वराज्य अधिकारी स्टेज का अनुभव कर रहे हैं। बापदादा खुश है क्योंकि अब के स्वराज्य अधिकारी ही विश्व राज्य अधिकारी अवश्य बनते हैं। तो बापदादा की तरफ से ऐसी अनुभवी आत्माओं को पदमगुणा मुबारक देना।

ऐसे कहते फिर बापदादा बोले, इस ग्रुप को अपने साथ लाइट की पहाड़ी पर ले चलते हैं। तो बापदादा दादी का हाथ में हाथ लेकर आगे-आगे चल रहे थे, जब लाइट की पहाड़ी पर पहुंचे तो क्या देखा, चारों ओर अनेक भक्त आत्मायें और दु:खी आत्मायें नीचे से पुकार रही थी कि ''हे हमारे पूर्वज पूज्य आत्मायें हमें भी सुख-शान्ति की अंचली दे दो।'' तो बापदादा बोले, आप सभी अब मन्सा सेवा का प्रैक्टिकल अनुभव करो। तो क्या देखा? जैसे सभी अलग-अलग दृष्टि देने लगे तो कई आत्मायें परिवर्तन होने लगी और जैसे बेसहारे को सहारा मिल जाए, उनकी स्थिति और शक्ल ऐसे हर्षित होने लगी, जैसे बेसहारे को सहारा मिल गया, मिल गया... इस परिवर्तन में शक्ल भी बदलने लगी। जैसे तड़प पूरी होने की सूरत होने लगी। जैसे कोई बहुत समय की प्यासी को एक बूंद मिलने से कैसा परिवर्तन होता है, ऐसे कोई-कोई आत्माओं की सूरत मूरत परिवर्तन होने का दृश्य देखा।

उसके बाद बाबा बोले, देखो बच्ची, कितनी प्यासी आत्माओं को कैसे सहारा मिल जाता है, यह प्रैक्टिकल अनुभव किया ना! ऐसे ही आगे भी मुख के आवाज को कन्ट्रोल करने से जो समय बच जायेगा उस समय को इस मन्सा सेवा में लगाते रहना, तो आप पूर्वज आत्माओं की फर्जअदाई पूरी होती रहेगी। आपके भक्त अपने इष्ट को पाकर खुश हो जायेंगे क्योंकि द्वापर से लेकर आपके कितने भक्त बने होंगे, उनकी आश पूरी करने वाले इष्ट तो आप ही हो। रहमदिल बच्चे अब रहम की अंचली दो, दृष्टि दो।

ऐसे अनुभव कराते बापदादा फिर बगीचे में ले चले और एक एक को बहुत-बहुत लवलीन स्वरूप की दृष्टि से, स्नेह में लवलीन कर दिया। बाद में सबको सौगात दी, सौगात में एक चित्र मीठे बाबा का था और बाबा की बांहों में समाए हुए हर एक का चित्र था जो बाबा ने प्रैक्टिकल में बांहों में लेते हुए अपने हाथों से एक एक को दिया। सब खुश हो रहे थे, सबके दिल से वाह बाबा वाह का गीत बज रहा था। फिर बाबा ने सभी को साकार वतन में भेज दिया।

बाद में बाबा हमसे बोले, बच्ची अब जो भी भट्ठी हो रही है, हर एक को बापदादा यादप्यार दे रहे हैं, साथ में वरदान भी दे रहे हैं कि हर एक बच्चा अब तीव्र पुरुषार्थी बन सदा ब्रह्मा बाप समान निर्विघ्न, निराकारी स्थिति में ब्रह्मा बाप समान साथी बन याद रखो - **अब रिटर्न जरनी है - अब घर जाना है।** इसी संकल्प से न्यारे और बाप के प्यारे बन आगे बढ़ो और बढ़ाते चलो। फिर बाबा ने अपनी मीठी प्यारी दादी जानकी को वतन में इमर्ज किया और बहुत स्नेह से गोदी में लेकर अपने में समा लिया और बोले, बच्ची को सेवा का बल और फल आगे से आगे बढ़ा रहा है। ऐसे कहते देश [illegible] एक-एक बच्चे को नाम और गुण सहित पदम-पदम गुणा यादप्यार देते, मुझे साकार वतन में भेज [illegible]

ओम् शान्ति।